उपर्युक्त व्याख्या से इस तथ्य पर प्रकाश पड़ता है कि व्यापक आर्थिक विश्लेषण (व्यापक
अर्थशास्त्र) के बढ़ते हुए महत्व का अर्थ सूक्ष्म आर्थिक विश्लेषण (सूक्ष्म अर्थशास्त्र) को महत्वहीन बनाना कदापि नहीं है। व्यापक अर्थशास्त्र को सूक्ष्म अर्थशास्त्र का स्थापन्न नहीं मानना चाहिए। ये दोनों एक–दूसरे के पूरक तथा सहयोगी है।

1.10 प्रणालियों की परस्पर निर्भरता (INTERDEPENDENCE OF THE METHODS)

सूक्ष्म तथा व्यापक अर्थशास्त्र आर्थिक विश्लेषण की दो अलग–अलग रीतियॉ हैं फिर भी ये दोनों एक–दूसरे से घनिष्ट रूप से संबंधित, पूरक तथा सहयोगी हैं। इनमें से कोई प्रणाली अपने आप में
पूर्ण नहीं है। प्रत्येक की अपनी–अपनी सीमाएँ तथा कमियॉ है। एक प्रणाली की सीमाएँ तथा दोष दूसरी प्रणाली द्वारा दूर कर लिए जाते हैं। दोनो प्रणालियॉ की अन्तः निर्भरता निम्नवत व्यक्त की जा सकती हैं।

1.11 सूक्ष्म विश्लेषण में व्यापक की भूमिका

1. एक व्यक्तिगत फर्म साधनों (श्रम, कच्चा माल, मशीन आदि) को जो पुरस्कार देती है वह उस फर्म
विशेष द्वारा साधनों की मॉग पर ही निर्भर नहीं करती। साधनों की कीमत सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था में उनकी मॉग एवं पूर्ति की शक्तियों द्वारा निर्धारित होती है।

2. एक व्यक्तिगत फर्म किसी वस्तु को कितनी मात्रा में बेच सकेगी, यह उस वस्तु की फर्म द्वारा निर्धारित
कीमत पर ही निर्भर नहीं करता बल्कि इस बात पर भी निर्भर करता है कि समाज में सम्बंधित वस्तु की मॉग के लिए क्रय–शक्ति कितनी है।

3. एक फर्म द्वारा उत्पादित वस्तु की कीमत केवल उसकी उत्पादन लागत पर ही निर्भर नहीं करती बल्कि
उद्योग की अन्य फर्मों की वस्तुओं की कीमतों से भी प्रभावित होती है।

इस प्रकार सूक्ष्म अर्थशास्त्र को विभिन्न व्यक्तिगत समस्याओं का अध्ययन एवं विश्लेषण करने के लिए व्यापक अर्थशास्त्र पर निर्भर रहना पड़ता है।

1.12 व्यापक विश्लेषण में सूक्ष्म की भूमिका

व्यापक विश्लेषण में अर्थव्यवस्था का समग्रता में अध्ययन किया जाता है। सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था की कार्य–प्रणाली को समझने के लिए उन व्यक्तिगत इकाइयों का विश्लेषण एवं अध्ययन करना आवश्यक हैं जिनसे मिलकर सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था बनी होती है। कभी–कभी व्यापक विश्लेषण पर आधारित निष्कर्ष भ्रामक सिद्ध होते हैं, अतः उनकों सूक्ष्म–विश्लेषण द्वारा प्रमाणित करने की आवश्कता होती है। इसे निम्न उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है–

1. यह मान लिया जाय कि कुल मॉग में वृद्धि होती है तो हम यह सोच सकते हैं कि सभी फर्में अपना
उत्पादन बढ़ाएँगी लेकिन यह निष्कर्ष उन फर्मों पर लागू नहीं होता जो लागत–वृद्धि नियम के अंतर्गत
कार्य कर रही हैं।

अध्ययन की विषय वस्तु अर्थव्यवस्था को देखने के कोण की वृहता अथवा लघुता का संकेत करते हैं। व्यापक अर्थशास्त्र के अंतर्गत देखने का कोण इतना वृहत होता है कि पूरी व्यवस्था अथवा अर्थव्यवस्था का समग्रीकृत अंग इसके अंतर्गत आ जाते हैं जबकि सूक्ष्म अर्थशास्त्र के अंतर्गत यह कोण इतना लघु होता है कि अर्थव्यवस्था का एक अंश ही सामने आ पाता है। इस तरह, इन दोनों में कुछ महत्वपूर्ण अन्तर भी है। संक्षेप में, दोनो के अंतर को निम्न प्रकार व्यक्त किया जा सकता है–

1. सूक्ष्म अर्थशास्त्र के अंतर्गत ''विशिष्ट आर्थिक इकाइयों के व्यवहार'' का अध्ययन किया जाता है जबकि व्यापक अर्थशास्त्र के अंतर्गत अर्थशास्त्री ''समस्त'' या समग्र अथवा सम्पूर्ण पर विचार करता है।
2. व्यापक अर्थशास्त्र इसलिए व्यापक अथवा समष्टिभावी अध्ययन है कि वह अपने में पूर्ण है। इस अध्ययन को प्रभावित करने वाले किन्हीं चरो को छोड़ा नहीं गया है। सूक्ष्म अर्थशास्त्र किसी वस्तु या सेवा के मूल्य एवं उत्पादन के निर्धारण हेतु ''दी हुई परिस्थितियों'' की मान्यता पर आधारित है। इस अध्ययन को प्रभावित करने वाले कुछ चरों को छोड़ दिया गया है। अतः सूक्ष्म अर्थशास्त्र का अध्ययन अपने में अपूर्ण या अधूरा अध्ययन है।
3. प्रो0 जे. के. मेहता व्यापक विश्लेषण को सारांशतः तथा मूलतः 'राबिन्सन कूसो के अर्थशास्त्र के रूप में देखते हैं जिसका अर्थशास्त्र है कि कूसों यद्यपि एक व्यक्तिगत इकाई के रूप में है, फिर भी
   उसके व्यवहार का अध्ययन व्यक्तिगत रूप में भी अपने आप में पूर्ण है। वही उत्पादन करता है, वही उपभोग करता है, वही उपभोग और बचत करता है। इस तरह, कूसो एक समवायी व्यवस्था है।
4. व्यवहार में कोई भी व्यक्ति (उदाहरण के लिए राबिन्सन कूसों) अथवा व्यवस्था ''पूर्ण'' नहीं होती। प्रत्येक व्यवस्था किसी अन्य बड़ी व्यवस्था का अंग होती है। ऐसी व्यवस्था एक खुली व्यवस्था होती है। इस रूप में एक खुली अर्थव्यवस्था पर ''बाह्य प्रभाव'' की उपेक्षा करें तो ऐसी अर्थव्यवस्था एक बंद व्यवस्था कहलाएगी। इस रूप में एक बंद अर्थव्यवस्था व्यापक अर्थव्यवस्था है जिसका अध्ययन व्यापक अर्थशास्त्र का विषय है।
5. व्यापक अर्थशास्त्र सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था का ''सामान्य'' अध्ययन करता है, सूक्ष्म अर्थव्यवस्था इसके अंगो के अध्ययन के माध्यम से इस (अर्थशास्त्र) का आंशिक अध्ययन करता है। इस तरह व्यापक अर्थशास्त्र में साम्य या संतुलन की अवस्था ''सामान्य'' हो जाती है, सूक्ष्म अर्थशास्त्र में संतुलन (या साम्य) की अवस्था आंशिक अथवा विशिष्ट हो जाता है।
6. सूक्ष्म अर्थशास्त्र इस बात का अध्ययन करता है कि वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य किस प्रकार निर्धारित किए जाते हैं जबकि व्यापक अर्थशास्त्र सामान्य वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य निर्धारण की कार्यप्रणाली का अध्ययन करता है। यहॉ सामान्य मूल्य का अर्थ सभी मूल्यों के जोड़ (योग) के औसत से है जिसे ''कुल विक्रय आगम'' कहा जाता है। व्यापक अर्थशास्त्र में कुल विक्रय आगम तथा राष्ट्रीय आय व रोजगार के परस्पर संबंध पर विचार किया जाता है।
7. प्रो0 बोल्डिंग सूक्ष्म विधि की तुलना पहले तराशने से करते हैं और व्यापक विधि की तुलनाएकमुश्त करने से करते हैं। बोल्डिंग महोदय के अनुसार व्यापक अर्थशास्त्र एक बुलडोजर अर्थशास्त्र हैं।

सूक्ष्म विश्लेषण के विषय हैं। उत्पादन के विभिन्न साधनों के मध्य आय का वितरण किस प्रकार किया जाता है, यह भी सूक्ष्म अर्थशास्त्र के अध्ययन का विषय हैं। सूक्ष्म अर्थशास्त्र का प्रयोग आर्थिक कल्याण की दशाओं की जॉच के लिए किया जाता है, अर्थात् व्यक्तियों को वस्तुओं तथा सेवाओं से प्राप्त संतुष्टियों का अध्ययन सूक्ष्म अर्थशास्त्र के अंतर्गत किया जाता है। इसके अंतर्गत इस बात का अध्ययन करते हैं कि सरकार की आर्थिक नीतियों का विशिष्ट वस्तुओं की कीमतों तथा मजदूरियों पर क्या प्रभाव पड़ता है तथा सरकार की नीतियॉ साधनों के विरण को किस प्रकार प्रभावित करती हैं, इत्यादि।

1.8 सूक्ष्म अर्थशास्त्र की आवश्यकता एवं प्रयोग
(NEEDS AND USES OF MICRO ECONOMICS)

1. सूक्ष्म अर्थशास्त्र के अंतर्गत अर्थव्यवस्था की व्यक्तिगत इकाइयों का अध्ययन किया जाता है। सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को समझने के लिए यह आवश्यक है कि जिन इकाइयों को मिलाकर अर्थव्यवस्था बनी है, उनका विधिवत् अध्ययन किया जाय। इस प्रकार सूक्ष्म सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को समझने में सहायक होता है।
2. सूक्ष्म विश्लेषण के अंतर्गत उत्पादन के विभिन्न साधनों के बीच उनके पुरस्कारों का वितरण तथा वस्तु विशेष की कीमत निर्धारण का अध्ययन किया जाता है।
3. सूक्ष्म विश्लेषण व्यक्तिगत फर्मों, उद्योगों परिवारों तथा व्यक्तियों को अपने–अपने क्षेत्र के आर्थिक व्यवहारों के संबंध में निर्णय लेने में सहायक है।
4. यह व्यक्तिगत इकाइयों की कार्यक्षमता का अध्ययन कर उनकी समस्याओं के समाधान में सहायक है।
5. यह व्यक्तिगत आय, बचत तथा विनियोग के स्त्रोंतों तथा उनके स्वभावों की विश्लेषणात्मक विवेचना करता हैं।
6. सूक्ष्म अर्थशास्त्र, आर्थिक नीतियों के निर्धारण में भी प्रमुख भूमिका निभाता है। इसके अंतर्गत सरकार की आर्थिक नीतियों का अध्ययन इस दृष्टि से किया जाता है कि उनका व्यक्तिगत या विशिष्ट इकाइयों के कार्यकरण पर कैसा प्रभाव पड़ता है।

1.9 सूक्ष्म तथा व्यापक अर्थशास्त्र में अंतर
(DIFFERENCE BETWEEN MICRO AND MACRO ECONOMICS)

सूक्ष्म अर्थशास्त्र और व्यापक अर्थशास्त्र आधारभूत रूप से भिन्न नहीं हैं। दोनों मानव व्यवहार का

अध्ययन करते है! दोनो ही अर्थव्यवस्था समस्याओं का विश्लेषण करते हैं। जब अर्थशास्त्र का अध्ययन इस रूप में किया जाता है कि वह अपने ''सम्पूर्णत्व'' में (समष्टि रूप में) अध्ययन का विषय बनता है तो इसे व्यापक (समष्टि) अर्थशास्त्र कहते हैं। किन्तु जब अर्थव्यवस्था की अलग–अलग (व्यष्टि) इकाइयों का अलग–अलग अध्ययन किया जाता है तो इसे सूक्ष्म अर्थशास्त्र कहते हैं। यहॉ ''व्यापक'' शब्द अर्थव्यवस्था की ''समग्रता'' या ''सम्पूर्णता'' को दिखलाता है।

व्यापक अर्थशास्त्र अंग्रेजी के ''मैक्रो इकॉनामिक्स'' और सूक्ष्म अर्थशास्त्र अंग्रेजी के ''माइक्रो इकॉनामिक्स'' के पर्याय के रूप में हिन्दी रूपान्तर है। 'मैक्रो' शब्द सामान्य रूप से ''वृहत'' या ''बड़े'' के अर्थ में और ''माइक्रो'' शब्द ''लघु'' या ''सूक्ष्म'' के अर्थ में प्रयुक्त होता है। जब ''इकॉनॉमिक्स'' के पहले ''मैक्रो'' अथवा ''माइक्रो'' शब्दों का प्रयोग होता है तो ये अर्थशास्त्र की ''बृहता'' अथवा ''लघुता'' का संकेत नहीं करते, बल्कि अर्थशास्त्र के

कमी यह है कि इसमें समूह पर ध्यान दिया जाता है, व्यक्तिगत इकाइयों पर नहीं जबकि समूह (या योग) की अपेक्षा समूह की बनावट, रचना, या अंग अधिक महत्वपूर्ण होते हैं। अतः प्राप्त निष्कर्ष भ्रामक हो सकते हैं। उदाहरणार्थ– मान लीजिए भारत में 1995 तथा 1996 में सामान्य मूल्य–स्तर में कोई परिवर्तन नहीं हुआ अर्थात मूल्य–स्तर स्थिर रहा। अब यदि हम इससे यह निष्कर्ष निकाले कि इन देनों वर्षों में राष्ट्रीय आय का वितरण भी स्थिर रहा होगा, यह गलत भी हो सकता है। यह हो सकता है कि इन वर्षों में कृषि पदार्थों के मूल्यों में में कमी आयी हो और औद्योगिक उत्पादों की कीमतों में वृद्धि हुई हो। इससे सामान्य मूल्य स्तर तो स्थिर बना रहा परंतु समाज में आय के वितरण में असमानता रही। मूल्य परिवर्तन से किसानों की आय में तो कमी आई जबकि व्यापारियों एवं उत्पादकों की आय में वृद्धि हो गयी। इस प्रकार स्पष्ट है कि जब तक समूह की आंतरिक संरचना की जानकारी न हो, केवल समूह के आधार पर निष्कर्ष निकालना उचित नहीं है।

3. यदि समूह का निर्माण करने वाले घटक परस्पर असम्बद्ध हों तो परिणाम दोषपूर्ण हो सकते हैं–

यदि समूह का निर्माण करने वाले विभिन्न अवयव परस्पर सम्बंधित न हों तो प्राप्त निष्कर्ष वास्तविकता से दूर हो सकते हैं। उदाहरणार्थ– यदि सामान्य मूल्य–स्तर को ही लिया जाय तो विभिन्न प्रकार की वस्तुओं के मूल्यों का औसत होता है। इसमें कुछ वस्तुएँ ऐसा होती है जिनके मूल्यों में बहुत तेजी से परिवर्तन होता है, जैसे–सोना–चाँदी आदि और कुछ वस्तुएँ ऐसी होती हैं, जिनके मूल्यों में अपेक्षाकृत बहुत धीमी गति से परिवर्तन होता है या स्थिर रहते हैं। यदि इन परस्पर असम्बद्ध वस्तुओं के मूल्यों के योग द्वारा सामान्य मूल्य स्तर का निर्माण किया जाता है। तो परिणाम दोषपूर्ण हो सकते हैं।

4. समूह की माप संबन्धी कठिनाइयॉ– व्यापक आर्थिक विश्लेषण में समूह की माप संबंधी कठिनाइयॉ

भी होती है। जैसे 10 किलो चीनीन और 8 लीटर पेट्रोल का योग किस प्रकार किया जाय। स्पष्ट है इसका योग करने के लिए मुद्रा रूपी पैमाने का सहारा लिया जाता है परन्तु स्वयं मुद्रा के मूल्य में परिवर्तन होने के कारण योगों को अच्छी तरह ज्ञात करना कठिन हो जाता है।

1.7 सूक्ष्म अर्थशास्त्र (MICRO ECONOMICS)

सूक्ष्म अर्थशास्त्र आर्थिक विश्लेषण की वह शाखा है जो कि विशिष्ट आर्थिक इकाइयों तथा अर्थव्यवस्थाओं के 'छोटे खण्डों' के व्यवहार तथा उनके पारस्परिक सम्बंधों का अध्ययन करता है। इस प्रकार, सूक्ष्म अथवा विशिष्ट अर्थशास्त्र के अंतर्गत अर्थव्यवस्था की विशिष्ट आर्थिक इकाइयों के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है जैसे– विशिष्ट फर्मों, विशिष्ट उपभोक्ताओं, विशिष्ट वस्तुओं या विशिष्ट साधनों की कीमतों का अध्ययन आदि। सूक्ष्म अर्थशास्त्र के अर्थ को स्पष्ट करते हुए **प्रो0 बोल्डिंग** ने लिखा है, '' सूक्ष्म अर्थशास्त्र, विशिष्ट फर्मों, विशिष्ट परिवारों, व्यक्तिगत कीमतों, मजदूरियों, आर्यों, व्यक्तिगत उद्योगों तथा विशिष्ट वस्तुओं का अध्ययन हैं।''

सूक्ष्म (या व्यष्टि) अर्थशास्त्र का क्षेत्र– जैसा कि इसकी परिभाषाओं से स्पष्ट है कि सूक्ष्म अर्थशास्त्र

के अध्ययन क्षेत्र के अंतर्गत उत्पादन, उपभोग तथा वितरण का अधिकांश भाग आता है। उपभोग के नियम जैसे– उपयोगिता ह्रास नियम, सम सीमांत उपयोगिता नियम तथा उपभोक्ता की बचत जो सीमांत विश्लेषण पर आधारित हैं, सूक्ष्म अर्थशास्त्र के अंतर्गत आते हैं। उत्पादन के क्षेत्र में, व्यक्तिगत फर्मों एवं उद्योगों में उत्पादन, आय तथा कीमत निर्धारण

1.6 समष्टि अर्थशास्त्र की सीमाएँ
(LIMITATION OF MACRO ECONOMICS)

समष्टि अर्थशास्त्र इतना उपयोगी होते हुए भी निम्न सीमाओं से युक्त है–

1. **संरचना की भ्रांति –** व्यापक आर्थिक विश्लेषण की संरचना की भ्रांति रहती है। अर्थात कुल व्यवहार

व्यक्तिगत क्रियाओं का कुल योग होता है परंतु व्यक्तिगत इकाइयों के योग के आधार पर व्यापक अर्थशास्त्र के लिए निकाले गए निष्कर्ष सदैव खरे नहीं उतरते। इस प्रकार, यह आवश्यक नहीं है कि कुछ व्यक्तियों या उनके छोटे ग्रुपों के सम्बंध में सत्य निष्कर्ष सम्पूर्ण समाज या अर्थव्यवस्था के सम्बन्ध में भी सत्य होंगे। उदाहरणार्थ–

(अ) व्यक्तिगत दृष्टिकोण से बचत एक अच्छी बात है। लेकिन यदि समाज के सभी व्यक्ति बचत

करने लगें तो यह अभिशाप बन सकती हैं। अर्थव्यवस्था में बढ़ी हुई बचतें मंदी की स्थिति ला सकती है, यदि उनका विनियोजन न किया जाए। इस संदर्भ में **केन्स** का कथन है कि "व्यक्तिगत बचत भले ही सद्‌गुण हो लेकिन राष्ट्रीय बचत निश्चित ही बुराई है।"

(ब) यदि कोई व्यक्ति बैंक में जमा अपना रूपया निकालता है तो इससे कोई हानि नहीं होती।

परंतु यदि सभी जमाकर्ता एक साथ ही बैंक से अपनी सारी जमा धनराशि निकालना शुरू कर दें तो बैंक ही फेल हो जाएगी और बैंकिंग व्यवस्था पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

2. **समूह या योग के आधार पर निकाले गए निष्कर्ष भ्रामक हो सकते हैं–** व्यापक विश्लेषण की दूसरी